REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

स्कूल जाने वाले बच्चों में कुपोषण की समस्या एवं निदान

डॉ. श्वेता श्री
गेस्ट फैकल्टी, स्नातकोत्तर गृह विज्ञान विभाग
ल० ना० मि० वि०वि०, दरभंगा.

प्रस्तावना

कुपोषण की समस्या से दुनिया के अधिकांश देश जूझ रहे है।यूनिसेफ की मानें तो दुनिया में कुपोषण के शिकार कुल बच्चों की तादाततकरीबन 44.6 करोड़ से भी अधिक है। इनमें से 5.7 करोड़ से ज्यादा तोअकेले भारत में ही है। यह संख्या दुनिया के कुल कुपोषित बच्चों कीएक-तिहाई से अधिक है। देश में करीब 19 करोड़ लोग कुपोषित है।यह आंकड़ा कुल आबादी का 14 फीसदी के करीब है। कुपोषण केमामले में सबसे ज्यादा खराब स्थिति महिलाओं की है। भारत में 48 सालतक के बच्चों की संख्या 43 करोड़ है। इसमें यदि महिलाओं की संख्यामिला दी जाये तो यह आंकड़ा कुल आबादी का 70 फीसदी केआस-पास पहुंच जाता है। दुनिया में हर 5वां बच्चा भारतीय है। जहांतक भुखमरी का सवाल है, दुनिया में यह तेजी से बढ़ रहा है।

वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि पोषण की अपर्याप्तता के कारणसाल 2050 तक भारत की तकरीबन 5.30 करोड़ से अधिक आबादीप्रोटीन की कमी से जूझेंगी। उस हालत में जबकि आज भी हमारा देशकुपोषण, भुखमरी, गरीबी, निरक्षरता, लिंगभेद, पर्यावरण विनाश औरजानलेबा बीमारियों पर विजय पाने व देश की अधिकांश आबादी को पीनेका साफ पानी मुहैया कराने में नाकान है। सच कहा जाय तो शुद्धपेयजल आज भी एक सपना है। इस मामले में लाख दावों के बावजूदलगातार हमे. पिछड़ते जा रहे है, जबकि यहां हर साल होने वाली 24 लाख बच्चों की मौत का कारण कुपोषण ही है।

बाल कुपोषण दर:-

हमारे यहाँ3 वर्ष से कम आयु के 47 फीसदी बच्चे कुपोषित है।45 फीसदी अपनी आयु के हिसाब से कद में काफी छोटे है। इस मामलेमें 205-46 के दौरान किये गये नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे-4 की मानेंतो कुपोषण के कारण देश भर के 38.5 फीसदी 5 साल तक के बच्चोंकी लंबाई उम्र से काफी कम था। इनमें से 2। फीसदी में यह समस्याकाफी गंभीर है। छोटे कद वाले बच्चों की तादाद शहरों में 3। और गांवोंमें 44 फीसदी है। कद छोटा होने वाले अत्यधिक प्रभावित बच्चों कीसंख्या 24 फीसदी है। ऐसे बच्चों का शहरों और गांवों में प्रतिशत समानही है। दरअसल समस्या इतनी भयावह हो चुकी है कि हमारी भावी नस्लेतक प्रभावित हुए बिना नहीं बची। बाल कुपोषण की शुरूआत गर्भवतीहोने के

दौरान तथा बच्चे के जीवन के शुरूआती पहले साल में ही होजाती है।

भारत में 47 लाख बच्चे एक साल की उम्र पूरा करने से पहले और 4.08 लाख बच्चे एक महीने की उम्र भी पूरा नहीं कर पाते और मौत केमुंह में चले जाते है। जबकि 5 साल से कम उम्र के 24 लाख बच्चे मौतके शिकार होते है। इस हालत में जबकि समूची दुनिया में 5 साल सेकम उम्र. के 9 लाख बच्चे पर्याप्त आहार न मिल पाने, बुनियादीसाफ-सफाई की और स्वास्थ्य रक्षा में कमी के कारण मौत के मुंह मेंचले जाते है। हालात की भयावहता का सबूत यह है कि जीवन केशुरूआती छह: महीनों में कम वजन के बच्चों का प्रतिशत 46 प्रतिशत सेबढ़कर 30 प्रतिशत तक जा पहुंचा. है। पर्याप्त स्तनपान न हो पाने सेभूख, डायरिया, निमोनिया और नवजात बच्चों में संक्रमण जन्म के बाद केदो सालों में होने वाली मौतों का मुख्य कारण है।

कुपोषण की समस्या तथा निवारण

कुपोषण, पोषण की वह स्थिति है जिसमें "भोज्य पदार्थ के गुणऔर परिमाण में अपर्याप्तता होती है। कभी-कभी आवश्यकता से अधिकउपयोग द्वाराभी हानिकारक प्रभाव शरीर में उत्पन्न होने लगता है तथाबाह्य रूप से भी उसका कुप्रभाव प्रदर्शित हो जाता है।" जब व्यक्ति काशारीरिक, मानसिक विकासआरोग्य हो तथा वह अस्वस्थ महसूस करें,या महसूस न भी करे तो भी भीतर से अस्वस्थ हो (जिस अवस्था कोकेवल चिकित्सक ही पहचान सकता है) तब स्पष्ट है कि उसे अपनीआवश्यकता के अनुरूप पोषक तत्त्व नहीं मिल रहे हैं। ऐसे स्थितिकुपोषण की स्थिति कहलाती है। कुपोषण वह स्थिति है जिसमें भोज्यतत्त्वों के गुण और परिमाण में अपर्याप्ता होती है तथा कभी-कभीआवश्यकता से अधिक उपयोग हो रहा होता है, जिससे हानिकारक प्रभावशरीर पर उत्पन्न हो जाते हैं।

हमारे देश के प्राथमिक वि में कुपोषण की समस्या व्यापकपैमाने पर पाया गया है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों के प्राथमिक विद्यालयोंमेंपढ़ने वालों का प्रतिशत अधिक है। कुपोषण समाज के धनी और निर्धन,दोनों वर्गों में यह देखने को मिलता है, परन्तु विशेष रूप से अभावग्रस्तक्षेत्रों में यह भीषण रूप से मौजूद रहता है। ऐसे क्षेत्रों में पोषक तत्त्वों कीन्यूनता ही इसका प्रमुख कारण है। आहार सर्वेक्षण के अनुसार भारत कीअधिकांश जनता का भोजन, पोषक तत्त्वोंकी दृष्टि से अत्यन्त अपर्याप्तहै। अपर्याप्ता, गुणात्मक तथा परिमाणात्मक दोनों दृष्टियों से होती है।गरीबों की तो शारीरिक मांग की पूर्ति ही नहीं हो पाती है, अत: कमजोरआर्थिक स्थिति वाले निम्न और मध्यम वर्गों में कुपोषण की समस्याअत्यन्त विकराल रूप लेकर खड़ी है।

प्राथमिक विद्यालयोंमें कुपोषण की समस्या को दूर करने का प्रयासकिया जा रहा है। विद्यालयोंमें सरकार द्वारासंचालित मध्याहन भोजनयोजना' बच्चों को कुपोषण दूर करने का एक कारगर कदम साबित होरहा है। गध्याहन भोजन के माध्यम से बच्चों को विद्यालयोंमेंपोष्टिक आहार उपलब्ध कराया जा रहा हैतथा बच्चों को शिक्षा के माध्यम से पौष्टिक आहार के बारे में शिक्षा दी जा रही है ।सरकारद्वाराचलाए गए विभिन्न कार्य में बारे के योजना क्रम- I है रहा जा बतलायाविद्यालयमें स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है तथा बालकों को स्वच्छ रहने के विभिन्न आयामों को बताया जाय I जाय की व्यवस्था की पेयजल स्वच्छ I

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- इंडियन कौंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (996), नेशनल न्यूट्रिशनमॉनिटरिंग ब्यूरो रिपोर्ट, 4996 ग्रामीण सर्वेक्षण, नेशलन इन्स्टीट्यूट फॉरन्यूट्रिशन, हैदराबाद ।

- गोपाल एस, शिवा एम, संपादित (999) नेशनल प्रोफाईल ऑन वूमैन,हेल्थ एण्ड डेवलपमेंट : इंडिया, वालेन्टरी हैल्थ एसोसिएशन ऑफइंडिया, नई दिल्ली |
- नीता अग्रवाल, बाल विकास
- पारीक, डॉ0 आशा, बाल विकास एवं पारिवारिक संबंध, कॉलेज बुकडिपो, जयपुर, 2006
- बख्शी, उपचारार्थ आहार प्रबन्धन तथा सामुदायिक पोषण, अग्रवालपब्लिकेशनस
- बृन्दा सिंह, आहार विज्ञान एवं पोषण, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2010
- भारत सरकार, वार्षिक रिपोर्ट 4994-95 स्वास्थ्य परिवार कल्याणमंत्रालय, नई दिल्ली
- विश्व स्वास्थ्य संगठन का प्रतिवेदन, 2009, पृ0-37

डॉ. श्वेता श्री

गेस्ट फैकल्टी, स्नातकोत्तर गृह विज्ञान विभाग ल० ना० मि० वि०वि०, दरभंगा.

LBP PUBLICATION